नवम्बर–दिसम्बर 2020

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 हमारा पहला मैच

उड़ान

7 मैडम आई / मेरी बकरी

8 कविता बनाना / आंधी

9 अचार की दुकान

11 तुक्का

12 आरती की बहादूरी

13 एक टोकरी बेर

ज्ञान विज्ञान

14 फोटोग्राफर का नौकर बना प्रसिद्ध वैज्ञानिक

जोड़–तोड़

15 लक्ष्मी का गणित

कलाकारी

18 तिल के लड्डू

बात लै चीत ले

19 गुणवती और दयालु शेर

21 **माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी**

22 **कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ**

ज्योति, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **अंजली मीना**, उम्र 12 वर्ष, समूह–सितारा
वर्ष 12 अंक 125–126

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

अंकित, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

हमारा पहला मैच

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

उस दिन 4 तारीख थी। स्कूल में मैडम बोली, तुम्हें 5 तारीख को खेलने जाना है। फिर हमने बोला मैडम हम पूरी तैयारी से आयेंगे फिर हमने सुबह से लेकर शाम तक तैयारी की। जब हम थक गये तो घर पर चले गये। मीनाक्षी, सपना, वर्षा, कृष्णा आदि सब लड़कियों का समूह था। हम सब सुबह पाँच बजे उठते थे। उस दिन हमने शाम को ही हमारी मम्मी से कहा, 'मम्मी हमारी जल्दी रोटी बना देना। मम्मी ने पूछा बेटी तुम हमारे हाथ इतनी जल्दी रोटी बनवाकर क्या करोगी? फिर मैं बोली 'मम्मी हमको स्कूल में जल्दी खेलने जाना है।' फिर मम्मी बोली ठीक है। मैं तुम्हारी जल्दी रोटी बना दूंगी। बात करते करते रात हो गई। हम सब खाना खाकर सो गये।

आंख खुली तो जल्दी–जल्दी तैयार होने लगे। फिर थोड़ी देर बाद सुबह हो गई। मुझसे पहले मेरी मम्मी पाँच बजे उठ गई थी। मेरी मम्मी चून तैयार करने लगी। जब मेरी मम्मी ने चून तैयार कर लिया तो फिर मेरी मम्मी हम दोनों बहनों को उठाने आई। पर हम दोनों बहन उठकर तैयार हो चुकी थी और दूसरी लड़कियों को जगाने चली गई। सबसे पहले हम मीनाक्षी के घर गये और मीनाक्षी को उठाया। जब मीनाक्षी उठी नहीं तो हमने उसके ऊपर थोड़ी पानी की बूंदे डाली। फिर मीनाक्षी जग गई तो फिर हमने दूसरी लड़कियों के घर जाकर सभी को जगा दिया। अब हम सब तैयार होकर स्कूल में खेलने चले गये।

स्कूल से हम सबको सुमेर गुरूजी 08:00 बजे वाली बस से प्रतियोगिता के लिए सवाई माधोपुर छोड़ने गये। 2 घंटे के बाद हम सवाई माधोपुर के पेट्रोल पम्प पर उतरे। हम कुछ देर तक मैडम के आने की राह देखने लगे। थोड़ी देर बाद मैडम भी आ गई। अब हमें राजबाग खेल मैदान के लिए जाना था। पर कोई ऑटो वाला

कृष्णा बैरवा,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–सूरज

जाने को राजी नहीं था। मैडम ने जैसे तैसे एक को बोला, ''भैया, हमारे बच्चों का मैच हैं आप हमें जल्दी छोटे राजबाग पहुँचा दो।'' आटो वाला बोला, ''नहीं मेडम, मैं नहीं जा सकता।'' हम दूसरे के पास गये। उसने कहा मैं आपको राजबाग पहुँचा दूंगा। जब हम राजबाग पहुँचे तो वहाँ खेलों का आयोजन हो रहा था। हमारा मैच अल्फा नामक एक स्कूल से होने वाला था। हमसे कहा गया था कि तुम्हारा मेच 02:00 बजे है इस लिए हमने पहले खाना खाया। लेकिन 2 बजने पर वो अचानक से बोले, ''तुम्हारी लड़कियों का मैच 04:00 बजे है।'' अब हमें उसी दिन घर वापस भी आना था। मैडम ने उनसे बात की और कैसे ना कैसे हमारा मेच 02:00 बजे करवाया। जब हमसे मैच करने वाली टीम आई तो वे लड़कियाँ हमसे बहुत बड़ी थी। जब हमारा मैच शुरू हुआ तो पहला गोल हमारी तरफ से किया और ऐसे ही मेच चलता रहा। अन्त में हमें मैच जीतने के लिए एक गोल करनी थी। सब सोच में पड़ गये कि कौन जीतेगा। इससे पहले हमें कभी इतनी टेन्शन नहीं हुई थी। हम घबरा रहे थे कि हमसे गोल होगा या नहीं। मैच फिर शुरू हुआ और आखिर में जाकर हम 1 गोल से हार गये। हमारे खेल में सब देखने वालों को मजा आया। उन्हे देखकर हम भी पूरे दिल और जान से खेले। मैड़म भी हमरे खेल से खुश थी।

भारती बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

मैडम आई

मेरी मैडम स्कूल आई।
संग में बच्चों को वो लाई।
बच्चों को लाकर दौड़ लगवाई।
दौड़ लगवाकर खूब पढ़ाया।
खूब पढ़ाकर नाच नचाया।
नाच नचाकर घर पर भेजा।
घर पर जाकर खाना खाया।
खाना खाकर सो सो गये।
सुबह फिर माँ ने जगाया।
उठो मैडम लेने आई।

दिलभर बैरवा,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–लहर

मेरी बकरी

मेरी बकरी बड़ी निराली।
दिल की साफ रंग की काली।
घास वो खाती हरी–भरी।
मुझसे बोले खरी–खरी।
रोज सुबह वो चरने जाती।
रोज शाम को वापस आती।
फिर बच्चे को प्यार जताती।
रात हुए सपनों में खो जाती।
रोज सुबह जब मैं मिलने जाती।
बीच राह में खड़ी वो पाती।
मैं फिर सोच में डूब जाती।
यह मुझसे पहले कैसे उठ जाती।
समझ ना पाई मैं यह बात।
मेरी बकरी बड़ी निराली।

भारती बैरवा,
उम्र–13 वर्ष, समूह–हरियाली

सोना, उम्र–12 वर्ष,
समूह–उजाला

कविता बनाना

अति सुन्दर एक कविता बनाई
दिमाग की मैंने बत्ती जलाई
शब्दों के चक्कर में चक्कर खाई
कितना मुश्किल है इसे बनाना
जैसे कांटे में मछली फँसाना
सारा ध्यान तुम इसमें लगाओ
मनभावन, सूंदर शब्दों को लाओ
थोड़ा सा भी भटका ध्यान
काम नहीं आता कोई ज्ञान
इसलिए पहले बात यह मानो
कविता के बारे में तुम भी जानो
इधर उधर की बात ना लाओ
पूरा ध्यान तुम इसमें लगाओ
कहीं ऐसी जगह पर जाओ
जहाँ तुम शांति पाओ
तब जाके एक बात रखो
उस पर ही फिर एक कविता लिखो
तब जाके एक लाइन है आती
धीरे धीरे वो कविता बन जाती
मैंने बताई तुमको बात ये आज
यह है कविता लिखने का एक सच्चा राज

उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया के बच्चे

आंधी

आंधी आई आंधी आई
पेड़ों को हिलाती आई
कचरे को फैलाती आई
धूल–मिट्टी उड़ाती आई
आंधी आई आंधी आई।

महेन्द्र गुर्जर,
उम्र–8 वर्ष, उदय पाठशाला
गिरिराजपुरा

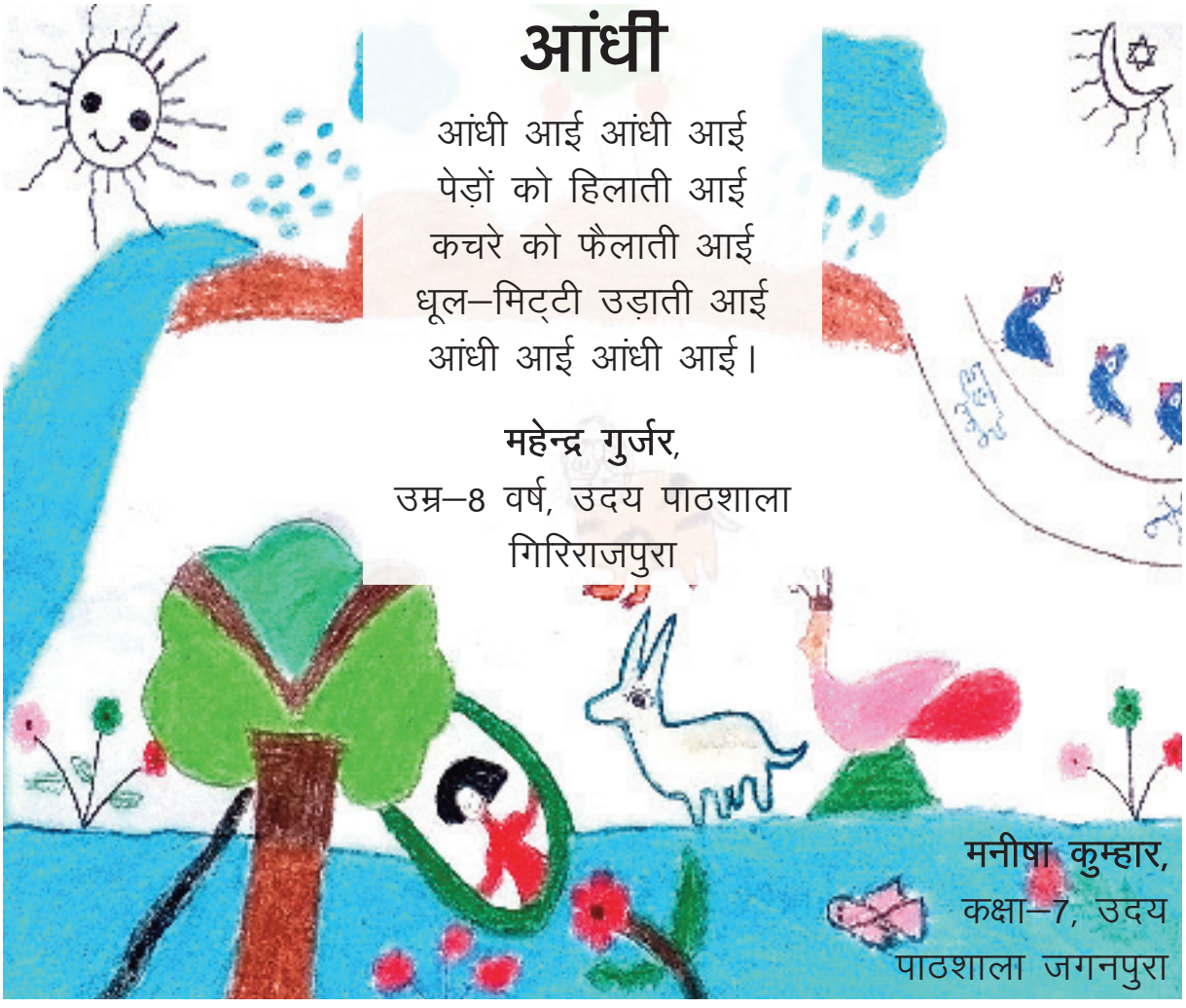

मनीषा कुम्हार,
कक्षा–7, उदय
पाठशाला जगनपुरा

विष्णु मीना,
कक्षा–6,
उदय पाठशाला
कटार

अचार की दुकान

एक बार की बात है। एक लड़की थी। उसका नाम मनीषा था। उसके माता–पिता नहीं थे इसलिए वह अपनी दादी के साथ ही रहती थी। दादी ज्यादातर आचार बनाया करती थी। मनीषा दादी को आचार बनाने में मदद करती थी। इसलिए वह भी अचार बनाना सीख गई।

मनीषा धीरे–धीरे बहुत बड़ी हो गई। उसकी दादी ने उसकी शादी एक मछवारे से कर दी। वह मछवारा रोज–रोज तालाब में जाता और मछलियाँ पकड़कर ले आता। उनकी जिंदगी में मनीषा बहुत खुश थी। कुछ समय बाद उसके दो जुड़वा बच्चे हुए। एक का नाम था सोहन दूसरे का मोहन था। उनका तो जैसे परिवार पूरा हो गया था। तभी मनीषा की जिन्दगी में मुसीबते आनी शुरू हुई। थोड़े दिन बाद उसकी दादी के मरने की खबर आई तो वे दोनों पति–पत्नी बहुत रोये।

परिवार की खातिर दोनों मछली पकड़ने का काम करने लगे। पर अभी और दुख आना बाकी था। दिन बाद मनीषा का पति भी मर गया। मनीषा इस दुःख को सह नहीं सकी और सारे दिन अपने पति को याद करके रोती रहती। घर में जो कुछ खाने को था वह सब खत्म हो गया। सब भूखे रहने लगे। मनीषा तो भूखे रहकर अपनी जान ही देना चाहती थी। पर बच्चो की चिन्ता उसे खाये जा रही थी। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे। सोचते–सोचते उसे अपनी दादी की याद आई। उसने मन में कहा 'मुझे मेरी दादी ने बचपन में आचार बनाना

सिखाया था।' उसने तय किया कि वह आचार बनाकर बाजार में बेचेगी। उसने ऐसा ही किया। लोगों को उसका अचार बहुत पसंद आया। जब भी वह अचार बेचने जाती सारा का सारा बिक जाता। लोग उसका इन्तजार करते रहते। उसके पास पैसे आते तो उनसे वह अपनी जरूरत का सामान ले लेती साथ में कुछ पैसे अचार के लिए भी बचाती।

बचत के पैसों से उसने एक दुकान खोल ली और अपनी मदद के लिए आदमी भी रख लिए। धीरे–धीरे उसकी कमाई बढ़ती गई और अचार की मांग भी बढ़ती गई। उसमें कुछ और लोगों को नौकरी दी और अपनी दुकान को बडा कर अचार की फैक्ट्री चालू कर दी। अब उसका अचार बाजार की दुकानों पर मिलने लगा।

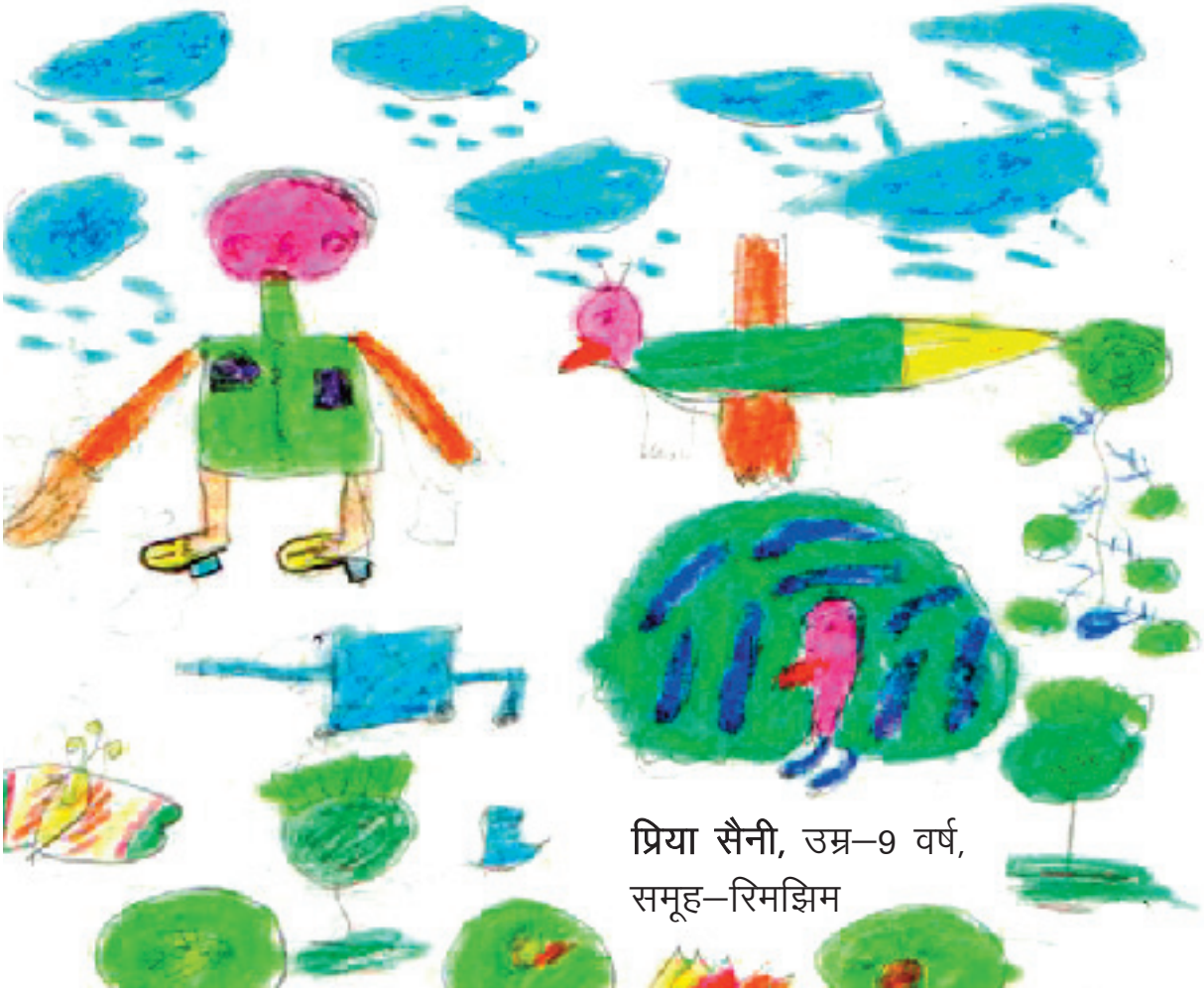

प्रिया सैनी, उम्र–9 वर्ष,
समूह–रिमझिम

उसका अचार पूरे शहर में मशहूर हो गया और वह सबसे बड़ी अचारवाली बन गई। उसके बेटे भी अब बड़े हो गये थे। उसने बेटों की शादी अच्छे घरों की लड़की से करवा दी और वह खुशी–खुशी उनके साथ रहने लगी। अब उसके बेटे बहू कारोबार संभालते हैं औ मनीषा अपने पोते–पोतियों के साथ मजे करती है।

मीनाक्षी बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–12 वर्ष

तुक्का

रिंकु मीना,
उम्र–13 वर्ष,
उदय पाठशाला
जगनपुरा

एक ज्योतिषी और उसका एक शिष्य जहाज पर यात्रा कर रहे थे। अचानक जोरदार तूफान आ गया। लगा अब जहाज डूब ही जायेगा। लोगों में चीखपुकार मच गई। सब जान बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगे। पर जाएँ तो कहाँ जाए। तब ज्योतिषी ने उन लोगों से कहा कि, ''घबराओ नहीं, यह जहाज नहीं डूबेगा।'' तभी किसी व्यक्ति ने ज्योतिषी से पूछा, आपको कैसे मालूम की यह जहाज नहीं डूबेगा?'' ज्योतिषी ने बताया कि, मैं एक ज्योतिषी हूँ, मुझे मालूम चल गया है कि यह जहाज नहीं डूबेगा।'' लोगों में घबराहट कुछ कम हुई। तूफान गुजर गया और किस्मत से जहाज नहीं डूबा। फिर क्या था लोगों ने ज्योतिषी को पैसों से लाद दिया। जब वे लोग मंजिल पर पहुँच गये तो शिष्य ने पूछा, ''महाराज मैं आपका चेला हूँ। बीस साल से आपके साथ हूँ। मुझे मालूम है कि आप इतने ज्ञानी नहीं हैं कि यह जान सकें कि जहाज डूबेगा या नहीं। फिर आपने यह कैसे जाना कि जहाज नहीं डूबेगा?'' ज्योतिषी ने जवाब दिया, ''मैंने कुछ नहीं जाना, मैंने तो बस तुक्का मारा था।'' अब शिष्य को गुस्सा आ गया। वह बोला, ''आपने तुक्का मारा था? अगर जहाज डूब जाता तो?'' ज्योतिषी ने जवाब दिया, ''कुछ भी नहीं होता, यदि जहाज डूब जाता तो पूछने के लिए बचता ही कौन।

आरती की बहादूरी

आसमान में बहुत तेज घटा छा रही थी। देखते ही देखते दिन में ही अंधेरा हो गया। इधर स्कूल में बैठे बच्चों को देखकर गुरूजी को चिन्ता होने लगी कि बच्चे घर कैसे जायेंगे। 5–10 मिनट में ही बहुत तेज बरसात होने लगी। बरसात इतनी तेज आई की गाँव में बाढ़ आ गई। स्कूल का एक बच्चा बाढ़ में बह गया। एक लड़की आरती तैरना जानती थी। पर वह तैरती–तैरती स्कूल से बहुत दूर चली गई थी। जब आरती ने देखा तो वह उसे बचाने के लिए वापस मुड़ी। पर वह जल्दी–जल्दी तैर नहीं पाई वह लड़का बहता हुआ आगे निकल गया। आरती ने ठान ली कि मैं उस बच्चे को बचाकर ही रहूंगी। आरती जितनी तेज तैर सकती थी तैरती रही फिर उसे वह लड़का दिखाई दिया। उसने उसके पास जाकर उसका हाथ पकड़ा और उसे किनाने ले आई।

पलक मीना,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

लेकिन दोंनों बहते हुए गाँव से बहुत दूर आ गये। ऊपर से रात भी होने लगी। वह सोचने लगी की हम रात कहाँ बितायें। लड़का बहुत डरा हुआ था। आरती ने लड़के से कहा, 'डरो मत अब तुम्हे कुछ नहीं होगा। जाओ तुम लकड़ियाँ ढूंढकर लाओ। मैं पत्थर से आग जलाने की कोशिश करती हूँ। लड़का लकड़ियाँ ले आया और आरती ने उनमें पत्थर से आग जलाई। उनके कपड़े भीगने से उन्हे तेज सर्दी लग रही थी। आग के पास बैठकर दोनों ने अपने कपड़े सुखा लिये। अब उनकी सर्दी भी दूर हो गई थी। तेज थकान के कारण दोनों को आग के पास बैठे बैठे नींद आ गई और वे दोनों वहीं सो गये। जब उनकी ऑख खुली तो सुबह हो गई थी। उन्होने खुद को एक घर में पाया। उनको किसी ने आवाज लगाई आरती आ जाओ और खाना खा लो। अपने साथ बच्चे को भी लाना। आवाज वाला और कोई नहीं आरती की बुआ थी। बुआ ने उनको बताया कि तुम्होरे गांव से बह जाने की सूचना मिली थी। जब गांव वालों के साथ किनारे पर गई तो तुम्हे सोते देखा और अपने साथ ले आई। वह कुछ दिन वहाँ रहे और वापस आ गये। स्कूल में आरती की बहादूरी के किस्से सबने सुने तो तालियां बजाकर उनका स्वागत किया गया।

पवन बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–खुशबू

एक टोकरी बेर

एक दिन की बात है। हम जंगल में बेर तोड़ने के लिए गए। मेरी मम्मी, पापा, भाई और मैं भी वहाँ साथ गई थी। हम बेर तोड़ रहे थे कि अचानक मुझे एक आवाज

अनुष्का सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रिमझिम

सुनाई दी। मैं डर गई। मैंने मम्मी को बताया। मम्मी ने कहा कुछ नहीं है। मैं फिर से बेर तोड़ने लगी। मेरे हाथ में कांटे लग गये और हाथ से खून निकलने लगा। मैं जोर से चिल्लाई तो मेरी मम्मी मेरे पास आकर बोली क्या हुआ? मैंने हाथ दिखाया। मम्मी ने कांटे निकाले। हाथ को पानी से धोया। बेर तोड़ते–तोड़ते हमे भूख लग आई फिर हमने रोटी खाई। हमने एक टोकरी बेर तोड़ लिए थे। इधर शाम होने पर थी। हम उन बेरों को लेकर घर को चल दिए। घर आकर मम्मी ने खाना बनाया। पापा मुझे लेकर डॉक्टर के पास गये। दवाई व पट्टी करवाकर घर ले आये। हम घर पहुँचे तो मम्मी बोली खाना खा लो। पर मेरे हाथों में तो पट्टी बंधी थी। मम्मी ने मुझे अपने हाथों से खाना खिलाया। फिर हम सो गये। जब सुबह उठी तो नहा धोकर तैयार हुई और स्कूल में जाने के लिए जिद करने लगी। परन्तु मम्मी ने नहीं भेजा तो मैं घर पर ही खेलने लगी।

काजल बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

ज्ञान विज्ञान

फोटोग्राफर का नौकर बना प्रसिद्ध वैज्ञानिक

दीपिका मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

अमेरिका के शहर नैशविले में एक लड़का फोटोग्राफर के यहाँ काम करता था। एक दिन कोई शख्स फोटोग्राफर की दुकान पर आया और उसकी एक बुक जो कि ज्योतिष विद्या से सम्बन्धित थी वह भूल गया। उस लड़के ने दुकान के मालिक से पूछा कि क्या मैं यह पुस्तक पढ़ सकता हूँ? मालिक से आज्ञा मिलते ही उसने पुस्तक पढ़नी शुरू कर दी। बाद में उसने निश्चय किया कि वह तारामंडल और आकाश के संबंध में ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त करेगा।

मालिक को उस लड़के ने मन की बात बताई तो उसने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा, ''मुझसे जो भी मदद की जरूरत हो बेझिझक कहना, मैं तुम्हारे लक्ष्य में तुम्हारे साथ हूँ।'' दूसरे दिन ही उसने एक छोटी–सी दूरबीन खरीदी और उसकी मदद से रात को घंटों छत पर बैठकर आक. ाश का सौंदर्य देखने लगा।

ऐसा करके उसने लगातार अपना ज्ञान बढ़ाना शुरू किया। फोटोग्राफर की दुकान पर काम से जो आय उसे होती थी उसी में से पैसे बचाकर उसने एक बड़ी दूरबीन खरीदी। उसे शाक्तिशाली बनाने के लिहाज से उसमें भारी लैंस लगवाने के लिए उसे फिलाडेल्फिया भेजा गया।

बड़ा लैंस लग जाने पर आकाशमंडल संबंधी उसने जो नई खोज की वह कुछ ही दिनों में बड़े–बड़े खगोल शास्त्रियों में चर्चा का विषय बन गई। फोटोग्राफर की दुकान पर कार्य करने वाला बेहद उत्सुक स्वभाव वाला यह लड़का एक दिन अमे. रिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में शामिल हुआ। यह लड़का कोई और नहीं बल्कि प्रोफेसर बर्नर थे जो एक प्रमुख खगोलशास्त्री के रूप में आज भी याद किये जाते हैं।

जोड़–तोड़

लक्ष्मी का गणित

निकीता मीना, उम्र–10 वर्ष, उदय पाठशाला जगनपुरा

मनोज हर दिन जिस मिनी बस में बैठता था, उसी जगह से लक्ष्मी भी बस में बैठती थी। आमतौर पर वे एक ही बस में बैठा करते थे। मगर कभी–कभार दूसरी में भी बैठ जाते थे।

उन दिनों उनके बस स्टॉप से सिविल लाइंस तक का किराया 4 रूपये लगता था। मगर लक्ष्मी कंडक्टर को 3 रूपये ही थमाती थी। इस बात को लेकर उसकी रोज कंडक्टर से बहस होती थी। मगर उसने एक रूपया कम देने का जैसे नियम बना ही लिया था।कभी कभार कोई बदतमीज कंडक्टर मिलता, तो लक्ष्मी को बस से उतार देता था। वह पैदल आ जाती थी पर एक रूपया नहीं देती थी।लक्ष्मी मनोज के ही महकमें के किसी दूसरे सैक्शन में चपरासी थी। एक साल पहले ही अपने पति की जबह पर उसकी नौकरी लगी थी।

लक्ष्मी का पति शंकर मनोज के महकमें में ड्राइवर था। सालभर पहले वह एक हादसे में गुजर गया था। लक्ष्मी की उम्र महज 25 साल थी। मगर उसके 3 बच्चे थे। 2 लड़के और एक लड़की।एक दिन मनोज पूछ ही बैठा, ''लक्ष्मी, तुम रोज एक रूपये के लिए कंडक्टर से झगड़ती हो, क्या करोगी इस तरह एक रूपया बचा कर?''

''अपनी बेटी की शारी करूंगी'' लक्ष्मी ने कहा।

''एक रूपये में शादी करोगी?'' मनोज हैरान था।

''बाबूजी, यों देखने में यह एक रूपया लगता है, मगर रोजाना आने जाने के

बचते हैं 2 रूपये, महिने के हुए 60 रूपये और सालभर के हुए 730 रूपये, 10 साल के 7 हजार 3 सौ रूपये तथा बीस साल के 14 हजार 6 सौ रूपये हुए।''

''5 सौ रूपये इकट्ठे होते ही मैं किसान विकास पत्र खरीद लेती हूँ। साढ़े 8 साल बाद उसके दोगुने पैसे हो जाते है।। 20 साल बाद शादी करूंगी, तब तक 40–50 हजार रूपये तो हो ही जायेंगे।''

मनोज उसका गणित जान कर हैरान था। उसने तो इस तरह कभी सोचा ही नहीं था। भले ही गलत तरीके से सही मगर पैसा तो बच ही रहा था।

लक्ष्मी का पति शराब पीने का आदी था। दिनभर नशे में रहता था। यह शराब उसे ले डूबी थी। जब वह मरा तो घर मे गरीबी का आलम था और कर्ज देने वालों की लाईन।

अगर लक्ष्मी को नौकरी नहीं मिलती, तो उसके मासूम बच्चों का भूखा मर जाना तय था। पैसे की तंगी और जिंदगी की जद्दोपेहद ने लक्ष्मी को इतनी सी उम्र में ही कम खर्चीली और समझदार बना दिया था।

प्रियंका मीना, उम्र–9 वर्ष, उदय पाठशाला जगनपुरा

एक दिन लक्ष्मी ने न जाने कहाँ से सुन लिया कि 10वीं पास करने के बद वह क्लर्क बन सकती है। बस वह पड़ गई मनोज के पीछे, ''बाबूजी, मुझे कैसे भी करके 10वीं पास करनी है। आप मुझे पढ़ा लिखा कर 10वीं पास करवा दो।''

वह हर रोज शाम या सुबह होते ही मनोज के घर आ जाती और उसकी पत्नी या बेटा–बेटी में से जो भी मिलता, उसी से पढ़ने लग जाती। कभी–कभार मनोज को भी उसे झेलना पड़ता था।

मनोज के बेटा–बेटी लक्ष्मी को देखते ही इधर–उधर छिप जाते। मगर वह उन्हें ढूंढ निकालती थी। वह 8वीं जमात तक तो पहले ही पढ़ी हुई थी। पढ़ने लिखने में

भी ठीक ठाक थी। लिहाजा उसने गिरते पड़ते 2–3 सालों में 10वीं पास कर ही ली।

कुछ साल बाद मनोज रिटायर हो गया। तब तक लक्ष्मी को लोवर डिविजनल क्लर्क के रूप में नौकरी मिल गई थी। उसने किसी कॉलोनी में खुद का मकान ले लिया था। धीरे–धीरे पूरे 20 साल गुजर गये।

एक दिन अचानक लक्ष्मी मनोज के घर आ धमकी। उसने मनोज और उसकी पत्नी के पैर छुए। वह उसे पहचान ही नहीं पाया था। लक्ष्मी ने चहकते हुए बताया, ''बाबूजी, मैंने अपनी बेटी की शादी कर दी है। दामादजी बैंक में बाबू हैं, बेटी भी बहुत खुश है।

''मेरे बड़े बेटे राजू को सरकारी नौकरी मिल गई है। छोटा बेटा महेश अभी पढ़ रहा है। वह पढ़ने में बहुत तेज है। देर सवेर उसे भी नौकरी मिल ही जायेगी।''

''क्या तुम अब भी कंडक्टर को एक रूपया कम देती हो, लक्ष्मी?'' मनोज ने पूछा।

''नहीं बाबूजी, अब पूरे पैसे देती हूँ ...'' लक्ष्मी ने हंसते हुए बताया। ''अब तो कंडक्टर भी बस से नहीं उतारता, बल्कि मैडम कह कर बुलाता है।''

खुशबू मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

थोड़ी देर के बाद लक्ष्मी चली गई। मगर मनोज का मन बहुत देर तक इस हिम्मती औरत को शाबाशी देने का होता रहा।

स्त्रोत – सरस सलिल पत्रिका

कलाकारी

मनीषा, उम्र–15 वर्ष, समूह–झरना

तिल के लड्डू

सर्दियां बढ़ गई हैं और किसान भी खरीफ की फसल (चांवल, मूँग, मूँगफली, सोयाबीन, गन्ना, तिल, मक्का, ज्वार, बाजरा...) तैयार कर चुका है। इस लिए बाजार में नया गुड़ और तिल दोनों आ गये है। तेज सर्दी में तिल के लड्डुओं को तो सभी याद करते हैं। अक्सर लोग इनको खरीदकर ही खाते हैं। जो बहुत महंगे होते हैं। अगर आप चाहें तो इनको अपने घर पर ही बना सकते हो। इन्हे बनाना बहुत आसान है। तो सबसे पहले आवश्यक सामग्री की सूची बनाते हैं–

सामग्री :– 60 ग्राम सफेद तिल, 150 ग्राम कद्दूकस किया हुआ गुड़ और थोड़ा सा घी।

विधि :– सबसे पहले तिल को बीनकर, धोकर अच्छी तरह मिट्टी धूल साफ कर लें। नहीं तो खाते समय किरकल आने से स्वाद खराब हो सकता है।

इसके बाद गैस पर एक छोटी कड़ाई में तिल को सुनहरा होने तक भूनें। भूने तिल निकाल कर कड़ाई खाली कर लें। उसमें आधा कप पानी डालकर गर्म करें और उसमें गुड डालकर पिघला दें। गुड़ सही तरह से पका की नहीं यह देखने के लिए एक कटोरी में ठंडा पानी लें। पानी में थोडा सा पकता हुआ गुड़ डालें। अगर पानी में गुड़ का बॉल बन जाये तो लड्डू बनाने के लिए गुड सही से पक चुका है। अब गैस बंद कर दें।

अब गुड़ में भुने तिल डालकर मिलाएं। जब यह ठीक से मिल जाये तो हल्का ठंडा होने तक इंतजार करें।

अब हाथ पर घी लगाएं और थोड़ा थोडा मिश्रण लेकर उसके लड्डू बना लें और एक डिब्बे में भर लें।

तैयार हैं आपके पौष्टिक, स्वादिस्ट और बनाने में आसान तिल के लड्डू। इन्हें जब आपका मन करें खाएं। ये खराब नही होते।

फायदे :– तिल का वैज्ञानिक नाम सीसमम इंडिकम है। यह वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट का अच्छा श्रोत है। इसमें मैग्नीशियम, लोहा, जिंक, कॉपर, मैंगनीज, कैल्शियम, फास्फोरस और विटामिन बी जैसे जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए तिल के लड्डू खाएं ना खाएं लेकिन सर्दी–सर्दी तिल का सेवन जरूर करें।

विष्णु गोपाल

बात लै चीत ले

सविता मीना, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय छारोदा

गुणवती और दयालु शेर

एक बार एक व्यक्ति था। उसका नाम राजा था। उसके पास बहुत सारी गायें थी। राजा को उन गायों से कुछ ज्यादा ही लगाव था। उनमें से एक गाय का नाम गुणवती था। राजा को गुणवती से कुछ ज्यादा ही लगाव था। वह उन गायों को चराने के लिए जंगल में जाता था। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर बांसुरी बाजाता था। सभी गायें बांसुरी की धुन सुनती हुई खुशी से चरती रहती थी और शाम को वे सब साथ–साथ वापस घर आ जाते थे।

गुणवती को एक दिन एक बछड़ा हुआ। गुणवती अपने बच्चे को दूध पिलाती और उसे कहानियाँ सुनाया करती थी। एक दिन ऐसा हुआ गुणवती जंगल में अपने साथियों से बिछुड़ गई। सभी गायें अपने घर चली गई। गुणवती रास्ता खोजते हुए डरती–डरती आ रही थी। तभी उसे रास्ते में एक शेर मिल गया। गुणवती डरकर भागने लगी। भागते–भागते रास्ते में एक तालाब मिला। आगे रास्ता ना पाकर गुणवती रूक गई।

शेर बोला, 'गुणवती कैसे रूक गई?'

गुणवती बोली, 'शेर जी, कुछ दिन पहले मुझे एक बछड़ा हुआ था। शेर जी अगर आप मुझे खा जायेंगे तो मेरे बछड़े का क्या होगा?'

शेर बोला, 'मझे क्या लेना–देना तेरे बछड़े से। मैं इस तरह के मौके का कब से इंतजार कर रहा था। तुम और सब गायों से मोटी हो। गुणवती तुम सोच रही होगी कि मुझे तुम्हारा नाम कैसे पता। तुम्हारा मालिक रोज तुम्हें चराने आता था। इसलिए

मुझे तुम्हारा नाम पता चल गया।'

गुणवती बोली, 'शेर जी मुझे पता है कि मेरी मौत निर्धारित है पर मरने से पहले सभी की आखिरी इच्छा पूछी जाती है।'

शेर बोला, 'अरे इंसानों के साथ रहने से तुम्हें भी ठगने की आदत पड़ गई। चलो बताओ तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?'

गुणवती बोली, 'शेर जी मेरे बच्चे को आखिरी बार दूध पिलाना चाहती हूँ।'

शेर बोला, 'चलो जाओ और वापस आ जाना। देखता हूँ तुम भी अपनी जुबान

राधा मीना, उम्र–11 वर्ष,
उदय पाठशाला जगनपुरा

की पक्की हो या नहीं।' गुणवती चली गई। गुणवती का बच्चा उसका इन्तजार कर रहा था। माँ को देखकर भाग कर आकर दूध पीने लगा। फिर गुणवती बोली मेरे प्यारे बच्चे जी भर कर दूध पी ले। अब मेरे जाने का समय आ गया है। फिर उसने अपने साथियों को सारी बात बताई और साथियों से कहा, 'मेरे बच्चे का ध्यान रखना।'

उसके बच्चे ने कहा, 'माँ तुम क्यों जा रही हो, मेरा ध्यान कौन रखेगा, मुझे कहानियाँ कौन सुनायेगा?'

गुणवती की सखियाँ बोली, गुणवती तुम पागल हो गई हो क्या ? तुम वापस क्यों जा रही हो। अभी हम मालिक को बताकर आयेंगे तो उन्हें कितना दुःख होगा?'

तभी गुणवती बोली, 'अरे नहीं। बेचारे शेर को भूखा नहीं रखूंगी। ठीक है मैं चलती हूँ। शेर मेरा इन्तजार कर रहा होगा।' यह कहकर गुणवती चली गई। वह एक बार रूकी पीछे देखा और चली गई। वह चलते–चलते शेर की गुफा पर पहुँच गई। शेर गुणवती को आता देखकर बोला, 'मैं तुम जैसे ईमानदार जानवर को नहीं खाऊंगा। जाओ अपने बछड़े को दूध पिलाओ और खुशी से रहो।' गुणवती यह सुनकर बहुत खुश हुई और वापस अपने बच्चे के पास चली गई।

आशा मीना, कक्षा–8, रा.उ.प्रा.वि. उलियाना

माथापच्ची

1 ताला मैं नहीं जो चाबी से खुल जाऊँ, लेकिन चाबी के बीना चल भी नहीं पाऊँ।
2 ऐसी कौनसी जगह है, जहाँ सब आते हैं और जाते हैं। वे सब कुछ न कुछ लेकर जाते हैं। लेकिन जो लेकर जाते हैं वह दिखता नहीं है और उसके बीना कुछ भी नहीं।
3. काला घोड़ा, सफेद सवारी। एक ऊतरे तो दूसरे की बारी।
4. छोटा हूँ पर बड़ा कहलाता हूँ, धोले तालाब में नहाता हूँ। –
5. लोग मुझे खाने के लिए खरीदते हैं, पर खाते नहीं हैं। –

भागीरथ मीना, शानू वैष्णव, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय छारौदा और कुतलपुरा मालियान

संतरा,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–उजाला

हीहीही ठीठीठी

1 भिखारी – ऐ भाई एक रूपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूँ।
कनिष्ठ – तीन दिन से भूखे हो तो एक रूपये का क्या करोगे?
भिखारी – वजन तौलूंगा, कितना घटा है?
2 पत्रकार – (ग्रामीण से) सुना है आपके गाँव में किसी बड़े आदमी ने जन्म लिया था।
ग्रामीण – नहीं साहब, हमारे गाँव में तो सिर्फ बच्चों ने ही जन्म लिया है।
3 शिक्षक – तुम्हारे पास दस भेड़े हैं। उनमें से 5 भेड़ें भाग जाएँ तो तुम्हारे पास कितनी बचेंगे।
छात्र – एक भी नहीं।
शिक्षक – क्या तुम्हें गणित नहीं आती?
छात्र – आती है। पर आप भेड़ों को नहीं जानते। एक के पीछे–पीछे सभी चलती हैं।

विजय श्री राजावत, कक्षा–5, राज.उच्च माध्य. विद्या. पाली

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

अर्पिता मीना, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय जामुलखेड़ा

पतंग बना, पतंग उडा
आज नहीं तो कल उडा

विष्णु गोपाल *द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

सुनीता, कक्षा–8,
समूह–संगम

एक जंगल था। उसमें कई तरह के पेड़–पौधे थे। जंगल के सभी पेड़–पौधे सूखे थे। लेकिन कुछ पेड़ पौधों में लाल रंग के फूल खिले थे। जंगल पूरा लाल दिखाई दे रहा था। ....

मानसिंह सिर्रा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

नौरतन प्रजापत, उम्र–14 वर्ष, समूह–उजाला

पहेलियों के ज़वाब –

1. गाड़ी 2. विद्यालय 3. तवा और रोटी 4. दही बड़ा 5. चम्मच

लक्ष्मी कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा